

प्रकाशनार्थ

पटना. 5 जून. विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर आज ईआईएसीपी-आद्री द्वारा, जो भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा समर्थित है, ने बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, पटना के सहयोग से एक वर्चुअल कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय था –“जलवायु कार्रवाई, अपशिष्ट में कमी और सतत विकास”। ईआईएसीपी-आद्री एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीट्यूट (आद्री) की जलवायु परिवर्तन विषयक इकाई है। कार्यक्रम की शुरुआत आद्री की सदस्य-सचिव डॉ. आशिमता गुप्ता के स्वागत भाषण से हुई।

कार्यक्रम के प्रथम वक्ता अशोका विश्वविद्यालय तथा शिकागो विश्वविद्यालय के डॉ. अंशुमन तिवारी थे। उन्होंने “भारत में औद्योगिक जल प्रदूषण एवं कृषि उत्पादन” विषय पर अपने शोध निष्कर्ष प्रस्तुत किए। उन्होंने गंगा नदी की जल गुणवत्ता पर औद्योगिक प्रदूषण के प्रतिकूल प्रभावों की चर्चा करते हुए बताया कि बक्सर से कहलगांव तक जल की गुणवत्ता में सुधार देखा गया है, जबकि हाजीपुर क्षेत्र में अब भी कुछ समस्याएँ बनी हुई हैं। उन्होंने यह भी बताया कि नदी के जल की खराब गुणवत्ता का कृषि उत्पादन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। अपने अध्ययन में उन्होंने बीओडी (जैव-रासायनिक ऑक्सीजन मांग) तथा सीओडी (रासायनिक ऑक्सीजन मांग) जैसे जल प्रदूषण संकेतकों का उपयोग किया।

द्वितीय वक्ता कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, सैन डिएगो के पीएचडी शोधार्थी श्री शुभ्रो भट्टाचार्य थे। उन्होंने “पर्यावरणीय दृष्टिकोण एवं व्यवहारों के अंतर-पीढ़ीगत प्रभाव” विषय पर व्याख्यान दिया। अपने वक्तव्य में उन्होंने बताया कि जब विद्यालयों में बच्चों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक किया जाता है, तो वे अपने अभिभावकों को भी पर्यावरण के प्रति अधिक संवेदनशील एवं जिम्मेदार बनने के लिए प्रेरित करते हैं।

भोजनावकाश के बाद आयोजित सत्र में लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के श्री हमज़ा सैयद ने अपने वक्तव्य में उन्होंने ग्रामीण भारत में विद्युत आपूर्ति की भूमिका, सामाजिक-आर्थिक असमानताओं पर उसका प्रभाव तथा ग्रामीण विकास में ऊर्जा पहुंच के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि विश्वसनीय एवं गुणवत्तापूर्ण बिजली आपूर्ति न केवल आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देती है, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य एवं जीवन स्तर में भी महत्वपूर्ण सुधार लाती है।

इसके पश्चात ग्रेट ब्रिटेन के रीडिंग विश्वविद्यालय की प्रो. स्टेफानिया लोवो ने “जलवायु परिवर्तन, पर्यावरणीय सततता एवं विकास” विषय पर मुख्य वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने जलवायु परिवर्तन के गरीबी, ऊर्जा संक्रमण, प्राकृतिक संसाधनों के दोहन तथा संस्थागत व्यवस्थाओं पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण किया। उन्होंने स्वच्छ ऊर्जा, पर्यावरणीय शासन, सतत खनन तथा जलवायु अनुकूल विकास नीतियों की आवश्यकता पर बल दिया। साथ ही बिहार में महत्वपूर्ण खनिजों की संभावनाओं तथा उनसे जुड़े पर्यावरणीय एवं सामाजिक पहलुओं पर भी अपने विचार साझा किए।

कार्यक्रम में बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की ओर से डॉ. नवीन कुमार (वरीय वैज्ञानिक), श्री एस. एन. जायसवाल (वैज्ञानिक सलाहकार) एवं श्री पप्पू कुमार (एन. सी. ए. पी. कन्सल्टेंट) की सक्रिय सहभागिता रही। वहीं आद्री की ओर से डॉ. सुनील कुमार गुप्ता, डॉ. दीपक कुमार, डॉ. अर्पण, श्री गुलशन पटेल एवं श्री संजीव कुमार उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन एवं समापन वक्तव्य के साथ हुआ।

(अभिषेक प्रसाद)

